एयर इण्डिया की अलाभकर उड़ानें

9960. श्री लालजी भाई :
श्री महा दीपक सिंह शाक्य :

क्या पर्यटन और नागर विमानन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या एयर इण्डिया ने अपनी सभी अलाभकारी उडाने बन्द कर दी है ; और

(ख) यदि हां, तो उनकी संख्या कितनी है और उनके नाम क्या हैं तथा उनकी सेवाएं कब से पुन: आरम्भ की जाएगी ?

पर्यटन और नागर विमानन मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) और (ख) एयर इण्डिया ने नैरोबी/एंटेबी नैरोबी तथा सिडनी फिजी सिडनी मैक्टरो पर अपनी उडानें क्रमश: 12 जनवरी 1973 से तथा 1 अप्रैल, 1974 से बन्द कर दी है । यद्यपि इसने फिजी के लिए अपने परिचालनो को बन्द कर दिया है, यह वहा पर अपना एक कार्यालय बनाए हुए है ताकि वह एयर इण्डिया की सेवाओ पर विश्व भर मे परिवहन बेच सके और अधिक से अधिक राजस्व अर्जित कर सके । जब स्थिति मे सुधार हो जाएगा और यह महसूस किया जाएगा कि फिजी के लिए सेवाए परिचालित करना एयर इण्डिया के लिए वाणिज्यिक रूप से लाभदायक होगा, तो सेवाओ को पुन: चालू किया जा सकता है ।

2 प्राग, ज्यूरिच तथा एम्सटर्डम जैसे महाद्वीपीय स्थानो के लिए एयर इण्डिया की सेवाओ को चौडी बाडी वाले जेट विमानो के चालू किए जाने पर 17 जुलाई, 1971 से बन्द कर दिया गया था ।

लता मंगेशकर को भेंट की गई स्वर्ण डिस्क को भारत लाने की अनुमति न दिया जाना

9961. श्री लालजी भाई : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या प्रसिद्ध पार्श्व-गायिका लता मंगेशकर को लन्दन की इलेक्ट्रिक एण्ड म्यूजिकल इन्डस्ट्रीज कम्पनी की ओर से एक स्वर्ण डिस्क भेंट की गई थी जिसे सीमा-शुल्क अधिकारियों ने उन्हे साथ नही ले जाने दिया था ।

(ख) यदि हां, तो इस घटना का संक्षिप्त विवरण क्या है ?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री के० आर० गणेश) : (क) और (ख) 28-3-1974 को ब्रिटेन से लौटने पर कुमारी लता मंगेशकर ने एक सुनहरी डिस्क का आयात किया जिस पर निम्नलिखित लेख अंकित था —

> "अद्वितीय ध्वनि-आलेखन (रिकार्डिंग) उपलब्धियो का स्मरणोत्सव मनाने की दृष्टि से लता मंगेशकर को भेंट किये गये 20,000 से अधिक ध्वन्याभिलेख (रिकार्डिंग्ज) । ई० एम० आई० ग्रुप आफ कम्पनीज, लन्दन । 8 मार्च 1974"

चूंकि वह उक्त डिस्क का मूल्य नही बता सकी इसलिये उसे शुल्क निर्धारण करने और इस बात का निर्णय करने की दृष्टि से रोक लिया गया था कि उसकी निकासी (कुमारी लता मंगेशकर को) दी जाने वाली असबाब सम्बन्धी छूट के अन्तर्गत की जा सकती है अथवा नही । बाद मे जब यह सुनिश्चित कर लिया गया कि उक्त डिस्क सोने का नही अपितु निकल का बना हुआ था जिस पर सोने के पानी की पतली परत चढ़ी

हुई थी तो 22-4-1974 को किसी प्रकार का शुल्क लिये बिना उक्त डिस्क उन्हे दे दिया गया और असबाब सम्बन्धी नियमो के अन्तर्गत डिस्क को निकासी योग्य पाया गया।

बहुमूल्य पत्थर आदि के निर्यात से अर्जित विदेशी मुद्रा

९१ श्री लालजी भाई : क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान भारत को बहुमूल्य पत्थर आदि के निर्यात से कितनी विदेशी मुद्रा की आय हुई है , और

(ख) उपरोक्त अवधि के दौरान केवल राजस्थान के ही विभिन्न नगरो से इनका निर्यात करने से कितना विदेश मुद्रा की आय प्राप्त हुई है ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री ए० सी० जार्ज) (क) तराशे तथा पालिश किए हुए कीमती पत्थरो के निर्यात से कमाई गई विदेशी मुद्रा निम्नोक्त प्रकार है

वर्ष	(मूल्य लाख रू० मे)
1971-72	849 13
1972-73	664 31
1973-74 (अप्रैल से नवम्बर 1973)	538 13

(ख) चूंकि निर्यात आकडे नगर-वार नही रखे जाते, अत यह जानकारी उपलब्ध नही है ।

जवाहरात आदि बनाने के लिये कच्चे माल का आयात

९१६३ श्री लालजी भाई : क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि .

(क) क्या देश मे जवाहरात आदि बनाने के लिए पूरा कच्चा माल विदेशो से आयात करना पडता है ;

(ख) क्या ऐसे कच्चे माल का उत्पादन करने वाले देश केवल बची खुची रद्दी और रद्दी कच्चा माल भारत को बेचते हैं क्योकि वे स्वय कीमती जवाहरात बनाते हैं; और

(ग) यदि हा, तो भारत सरकार का इस सम्बन्ध मे क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री ए० सी० जार्ज) : (क) जी नही ।

(ख) और (ग) प्रश्न नही उठते ।

मीनाकारी की चीजें, आभूषण तथा वस्त्रो के विदेशो को निर्यात से अर्जित विदेशी मुद्रा

9964 श्री लालजी भाई क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि .

(क) क्या भारत मे चादी पर मीनाकारी का काम केवल राजकोट (गुजरात) तथा नाथद्वारा राजस्थान मे होता है परन्तु सरकार इस उद्योग को किसी प्रकार का बढ़ावा अथवा सरक्षण नही दे रही है ,

(ख) क्या नाथद्वारा के मीनाकारी के काम मे वस्त्रो तथा आभूषणो की माग इन दिनो मे सोवियत रूस, अमरीका तथा बहुत से लोकतांत्रिक देशो मे बहुत है और यह विदेशी मुद्रा के अर्जन का साधन हो सकता है परन्तु राज्य तथा केन्द्रीय सरकार की उपेक्षा के कारण यह उद्योग धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है , और